International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 6; November 2018; Page No. 67-70

सतना जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर वाणिज्य समूह के छात्र–छात्राओं की तार्किक योग्यता एवं शालेय समायोजन का पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

डॉ० महेन्द्र मणि तिवारी
पी–एच.डी. (शिक्षा), अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र सतना जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर वाणिज्य समूह के छात्र–छात्राओं की तार्किक योग्यता एवं शालेय समायोजन का पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन पर आधारित है। शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के वाणिज्य समूह के छात्रों की तार्किक योग्यता की औसत उपलब्धि 31.80 तथा मानक विचलन 7.05 है तथा छात्राओं की औसत उपलब्धि 31.30 तथा मानक विचलन 7.16 है। शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के वाणिज्य समूह के छात्र–छात्राओं के तार्किक योग्यता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के वाणिज्य समूह के छात्रों की शालेय समायोजन की औसत उपलब्धि 32.10 तथा मानक विचलन 7.65 है तथा छात्राओं की औसत उपलब्धि 31.00 तथा मानक विचलन 8.00 है। शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के वाणिज्य समूह के छात्र–छात्राओं के शालेय समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

मूल शब्द : उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, वणिज्य समूह, तार्किक योग्यता, शालेय समायोजन, अध्ययन।

1. प्रस्तावना
शिक्षा के सार्वभौमिक एवं व्यापक महत्व को स्वीकार करते हुए सन् 1950 से निरंतर प्रयास किया जाता रहा है कि साक्षरता के शत्–प्रतिशत लक्ष्य को हम प्राप्त कर सकें। हमारी शिक्षा "सबके लिए शिक्षा" हमारे भौतिक और आध्यात्मिक विकास की बुनियादी आवष्यकता है, शिक्षा सुसंस्कृत बनाने का माध्यम है। यह हमारी संवेदनशीलता और दृष्टि को प्रखर करती है, जिससे राष्ट्रीय एकता विकसित होती है, इससे वैज्ञानिक विधियों के प्रयोग की सम्भावना बढ़ती है। इससे विचार एवं चिन्तन में स्वतंत्रता आती है। यह संविधान में प्रतिष्ठित समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता और लोकतंत्र के लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक है। इससे आर्थिक व्यवस्था के विभिन्न स्तरों की आवश्यकतानुसार जनशक्ति का विकास होता है। हमारी शिक्षा ही राष्ट्रीय मूल्यों को प्रत्येक व्यक्ति के चिन्तन एवं जीवन के अंग के रूप में विकसित करेगी। इन राष्ट्रीय मूल्यों में हमारी समान सांस्कृतिक धरोहर, धर्मनिरपेक्षता, लोकतंत्र, सामाजिक क्षमता, स्त्री–पुरुषों में समानता, सीमित परिवार का महत्व तथा पर्यावरण संरक्षण आदि शामिल हैं। हमारी शिक्षा हमारे वर्तमान तथा भविष्य निर्माण का अनुपम साधन है। शिक्षा के इन महत्वों को प्राप्त करने हेतु हम जिन उद्देश्यों को निर्धारित करते हैं वे ही पथ–प्रदर्शक और संकेत स्तम्भ बन, जहाँ एक ओर व्यक्ति में ज्ञान रुचियों, आदर्शो, आदतों और विविध क्षमताओं के विकास हेतु क्षेत्र निर्माण करते हैं, वहीं मनुष्य को विभिन्न रूपों से आवश्यकतानुसार भौतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक वातावरण के अनुकूल बनाते हुए मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति करते हैं। उपरोक्तानुसार हमारी शिक्षा का उद्देश्य भौतिक एवं आत्मज्ञान की प्राप्ति, सभ्यता एवं संस्कृति का पोषण, व्यक्तित्व के समस्त अंगों का विकास, आत्मानुभूति एवं आत्माभिव्यक्ति का प्रवर्धन, 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के आदेश के अनुसार राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग एवं सहअस्तित्व की भावना का विकास, सामाजिक कुशलता, नैतिकता एवं चरित्र निर्माण की क्षमता को विकसित करने में सहायक हो। सभी को समान अवसर मिले, जिससे समानता को बढ़ावा मिले एवं सामाजिक वातावरण तथा विरासत में मिले अनेक पूर्वाग्रहों एवं कुंठाओं को दूर किया जा सके एवं प्रत्येक स्तर पर दी जाने वाली शिक्षा का न्यूनतम स्तर निर्धारित किया जावे।
शिक्षा वास्तव में एक प्रक्रिया है जो जीवनपर्यन्त चलती है। फिर भी व्यक्ति को शिक्षित करने के लिए औपचारिक शिक्षा पद्धति का निर्माण किया गया है। वस्तुतः इस पद्धति का संचालन विद्यालयों में सम्पादित होता है जहाँ पर परम्परागत ढंग से नियमानुसार शैक्षिक गतिविधियों को संचालित किया जाता है। विद्यालयों में संचालित होने वाली शैक्षिक प्रक्रिया मुख्यतः तीन आधार बिन्दुओं पर केन्द्रित होती है। इनमे से प्रथम विद्यार्थी, द्वितीय शिक्षक तथा तृतीय क्रम में पाठ्यक्रम का स्थान आता है। निश्चित रूप से इन तीनों ही आधारभूत बिन्दुओं में विद्यार्थियों का स्थान सर्वोपरि है क्योंकि विद्यालयीन समस्त गतिविधियाँ छात्र केन्द्रित होती हैं। फिर भी शिक्षक तथा पाठ्यक्रम दोनों की उपादेयता को किसी भी कीमत में कम आँकलित नहीं किया जा सकता। शिक्षक समस्त विद्यालयीन गतिविधियों के संचालन के केन्द्र बिन्दु हैं। शिक्षक के द्वारा की गई गतिविधि का सीधा प्रभाव छात्रों तथा विद्यालय दोनों में परिलक्षित होता है।
शिक्षण एक स्वयं में अति विस्तृत क्षेत्र है तथा अनुसन्धान किसी समस्या के समाधान के लिए चरणबद्ध पद्धति से किया जाने वाला प्रयास है। वहीं शैक्षिक अनुसन्धान से मूल प्रश्नों का समाधान किया जा सकता है तथा इसके परिणामस्वरूप नवीन ज्ञान में वृद्धि की जा सकती है। निश्चय ही शैक्षिक अनुसन्धान अन्य सामाजिक तथ्यों से पृथक है क्योंकि अन्य सामाजिक विषयों के अनुसन्धान में नवीन ज्ञान की वृद्धि को ही महत्व दिया जाता है जबकि शैक्षिक अनुसन्धान में वृद्धि के साथ–साथ उसकी उपयोगिता का होना भी अत्यंत आवश्यक है। इस प्रकार शैक्षिक अनुसन्धान के अन्तर्गत शिक्षा के क्षेत्र में नवीन विषयों अथवा तथ्यों की खोज नवीन सिद्धांतों तथा सत्यों का क्रियान्वयन किया जाता है।

2. अध्ययन की आवश्यकता
शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल सतना जिले वरन् सम्पूर्ण मध्यप्रदेश के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के

वाणिज्य समूह के छात्र–छात्राओं की तार्किक योग्यता व शालेय समायोजन की वर्तमान स्थिति तथा उसमें आने वाली कठिनाइयों का आंकलन किया जा सकेगा।

3. शोध की परिकल्पनायें

प्रायः मानव तथ्यों तथा प्राथमिक अध्ययन के आधार पर समस्या के समाधानों के लिए अपना अनुमान लगाता है। मानव द्वारा लगाये गये अनुमानों को ही परिकल्पनाएँ कहा जाता है। शोध की परिकल्पनाएँ निम्नानुसार है–

1. "शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के वाणिज्य समूह के छात्र–छात्राओं की तार्किक योग्यता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. "शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के वाणिज्य समूह के छात्र–छात्राओं के शालेय समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"

4. उद्देश्य

अनुसन्धान का मूलभूत उद्देश्य पुराने तथ्यों का पुनः परीक्षण करके जीवन तथा घटनाओं के विषय में ज्ञान में वृद्धि तथा उनका नवीनीकरण करना है। इस उद्देश्य में पूर्व स्थापित सिद्धांतों की जाँच तथा परीक्षण करना भी सम्मिलित है। इसमें मौलिक सिद्धांतों से सम्बन्धित अनुसन्धान किये जाते हैं। इसमें नवीन ज्ञान अर्जित करके अनुसन्धान की आवश्यकता, नवीन परिस्थितियों तथा नवीन समस्याओं के उत्पन्न होने से पड़ती है। इस उद्देश्य के परिणामस्वरूप ऐसे नये सिद्धांतों का अनुसन्धान किया जाता है, जिसके द्वारा तात्कालिक समस्या का समाधान किया जा सके। नवीन तथ्यों के विषय में सूचनाएँ तथा पुरातन तथ्यों की पुनःपरीक्षा को सम्पादित करके अनुसन्धान बौद्धिक उद्देश्य की पूर्ति में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है। शोध का उद्देश्य निम्नानुसार है–

- शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के वाणिज्य समूह के छात्र–छात्राओं की तार्किक योग्यता का अध्ययन करना।
- "शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के वाणिज्य समूह के छात्र–छात्राओं के शालेय समायोजन के सार्थकता का अध्ययन करना।

5. शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र जिला सतना है। इसके अन्तर्गत 8 विकासखण्ड – सतना (सोहावल), चित्रकूट (मझगवाँ), रामपुर बघेलान, नागौद, ऊचेहरा, अमरपाटन, रामनगर एवं मैहर हैं। अतः जिला अन्तर्गत स्थित उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालय सम्मिलित होगें।

6. शोध विधियाँ

शोध कार्य को संपूर्णता प्रदान करने हेतु सांख्यिकी विधि का उपयोग किया गया है।

सांख्यिकी विधि

प्रयुक्त शोध उपकरणों से प्राप्त प्रदत्तों के सारणीयन के उपरान्त आवश्यकतानुसार माध्य, माध्यिका एवं बहुलक, दो चरों में सार्थक अन्तर के आंकलन हेतु मध्यमान विचलन, टी–परीक्षण जैसी सांख्यिकी विधियों का आवश्यकतानुसार प्रयोग किया गया है।

7. न्यादर्श चयन

सतना जिला का क्षेत्र व्यापक है, जिस कारण सभी उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों का अध्ययन करना संभव नहीं है, इसलिए जिले के सभी विकासखण्डों से 5–5 विद्यालय कुल 40 विद्यालयों का चयन दैव निदर्शन द्वारा अध्ययन हेतु लिया गया। विद्यालयों का चयन करते समय यह विशेष रूप से ध्यान रखा गया कि सभी विकासखण्डों के विद्यालय ऐसे हो जो अपने–अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर सके तथा ये सभी विद्यालय शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों से संबंधित हो। उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के वाणिज्य समूह के छात्र–छात्राओं की शालेय समायोजन का अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित प्रत्येक विद्यालय से 5–5 छात्र–छात्राएँ कुल 200 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु लिया गया है। इस प्रकार यह अध्ययन दोनों दृश्टियों से सैद्धान्तिक एवं अनुभवाश्रित परिपूर्ण होगा।

8. पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विज्ञान समूह के छात्र–छात्राओं की शालेय समायोजन का छात्र–छात्राओं के शिक्षण अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करने पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – गुप्ता एवं गुप्ता (2007)[1], अग्रवाल, अनिल (2005)[2], कपिल, एच.के. (1996)[3], शर्मा, ओ.पी. (2004)[4], तिवारी, महेन्द्र मणि एवं जय सिंह (2017)[5] एवं त्रिपाठी, मनीष कुमार एवं डॉ. जय सिंह (2016)[6] तिवारी, महेन्द्र मणि (2018)[7].

9. शोध क्षेत्र का परिचय

भारत के हृदय स्थल में बसा मध्यप्रदेश अपने आप में विभिन्न संस्कृतियों, पुरासम्पदाओं, प्राकृतिक सौंदर्यता, अनमोल धरोहरों, धार्मिक स्थलों, अनुपम कलाकृतियों से सुसज्जित है। सतना मध्यप्रदेश के उत्तर पूर्वी सीमा के मध्य स्थित वर्तमान रीवा संभाग का एक महत्वपूर्ण व्यवसायिक एवं औद्योगिक प्रधान जिला है। जिले के उत्तर में उत्तर प्रदेश का बाँदा जिला पूर्व में रीवा एवं सीधी जिला, दक्षिण में शहडोल व जबलपुर जिला, तथा पश्चिम में पन्ना जिला स्थित है। जिला अपनी धार्मिक विरासतों, औद्योगिक संस्थानों, सांस्कृतिक ऐतिहासिक परिदृश्यों, प्रमुख वनोपज एवं खनिज के कारण सर्वोच्च शिखर पर है। जिला वीर, पराक्रमी, योद्धाओं, वीरांगनाओं, सेनानियों आदि से जाना पहचाना जाता है।

सतना जिला 23.58°–25.12° उत्तरी अक्षांश 80.12 – 81.23° पूर्वी देशान्तर पर स्थिति है। जिले समुद्र तल से ऊँचाई 317 मी. है, नागौद 626 मी., अमरपाटन और मैहर 537.06 मीटर है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयेाग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

सारणी 1: शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के वाणिज्य समूह के छात्र–छात्राओं की तार्किक योग्यता का अध्ययन

क्र.	प्राप्तांक की स्थिति	शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के वाणिज्य समूह के छात्र–छात्राओं की तार्किक योग्यता			
		छात्र		छात्राएँ	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	0 से ऊपर किन्तु 20 अंक से कम (उपलब्धि परीक्षण पर तार्किक योग्यता की प्राप्ति नहीं)	5	5.00	6	6.00
2.	20 अंक से अधिक किन्तु 30 अंक से कम (उपलब्धि परीक्षण पर तार्किक योग्यता की प्राप्ति)	28	28.00	33	33.00
3.	30 अंक से अधिक किन्तु 40 अंक से कम (उपलब्धि परीक्षण पर तार्किक योग्यता की ओर अग्रसर)	60	60.00	53	53.00
4.	40 अंक से अधिक किन्तु 50 अंक से कम (उपलब्धि परीक्षण पर तार्किक योग्यता की ओर पूर्णरूप से अग्रसर)	7	7.00	8	8.00

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त तालिका क्रमांक – 1 से न्यादर्श हेतु चयनित उच्चतर माध्यमिक स्तर के वाणिज्य समूह में अध्ययनरत 100 छात्र एवं 100 छात्राओं का उपलब्धि परीक्षण पर तार्किक योग्यता सम्बंधी जानकारी का संकलन किया गया है। उपरोक्त सारणी क्रमांक – 1 के ऑकड़े दर्शाते है, कि शोध क्षेत्र में उच्चतर माध्यमिक स्तर के वाणिज्य समूह में न्यादर्श हेतु चयनित कुल 100 छात्रों में से 6 छात्रों ने उपलब्धि परीक्षण पर तार्किक योग्यता की प्राप्ति नही की, जबकि 32 छात्रों ने उपलब्धि परीक्षण पर तार्किक योग्यता की प्राप्ति कर ली है तथा 54 छात्रों ने उपलब्धि परीक्षण पर तार्किक योग्यता की ओर अग्रसर है एवं 8 छात्रों ने उपलब्धि परीक्षण पर तार्किक योग्यता ओर पूर्णरूप से अग्रसर है।

इसी प्रकार शोध क्षेत्र में उच्चतर माध्यमिक स्तर के वाणिज्य समूह में न्यादर्श हेतु चयनित कुल 100 छात्राओं में से 9 छात्राओं ने उपलब्धि परीक्षण पर तार्किक योग्यता की प्राप्ति नही की, जबकि 33 छात्राओं ने उपलब्धि परीक्षण पर तार्किक योग्यता की प्राप्ति कर ली है तथा 52 छात्राओं ने उपलब्धि परीक्षण पर तार्किक योग्यता की ओर अग्रसर है एवं 6 छात्राओं ने उपलब्धि परीक्षण पर तार्किक योग्यता की ओर पूर्णरूप से अग्रसर है।

सार्थकता हेतु सारणी

समूह	संख्या	सामान्तर माध्य	मानक विचलन	अनुपात
छात्र	100	31.80	7.05	**0.49**
छात्राएँ	100	31.30	7.16	

$d.f = (N_1-1) + (N_2-1)$
$= (100-1) + (100-1)$
$= 99+ 99$
$= 198$

विश्लेषण एवं व्याख्या

शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के वाणिज्य समूह के छात्र–छात्राओं की उपलब्धि परीक्षण पर तार्किक योग्यता का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है। सांख्यिकी विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के वाणिज्य समूह के छात्रों की तार्किक योग्यता की औसत उपलब्धि 31.80 तथा मानक विचलन 7.05 है तथा छात्राओं की औसत उपलब्धि 31.30 तथा मानक विचलन 7.16 है।

शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के वाणिज्य समूह के छात्र–छात्राओं की तार्किक योग्यता का सार्थकता सारणी में किया गया है। दोनों समूहों की औसत उपलब्धियों में अंतर की गणना 't' परीक्षण के द्वारा की गई है। गणना से प्राप्त 't' का मान 0.49 है।

198 d.f. पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.60 एवं 0.05 विश्वास स्तर पर 1.65 है, जबकि गणना से प्राप्त 't' का मान 0.49 है जो कि दोनों विश्वास स्तरों पर मानक मानों से कम है। अतः शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के वाणिज्य समूह के छात्र–छात्राओं की तार्किक योग्यता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अतः परिकल्पना सत्यापित है।

सारणी 2: शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के वाणिज्य समूह के छात्र–छात्राओं के शालेय समायोजन का अध्ययन

क्र.	प्राप्तांक की स्थिति	शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के वाणिज्य समूह के छात्र–छात्राओं के शालेय समायोजन			
		छात्र		छात्राएँ	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	0 से ऊपर किन्तु 20 अंक से कम (उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की प्राप्ति नहीं)	7	7.00	7	7.00
2.	20 अंक से अधिक किन्तु 30 अंक से कम (उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की प्राप्ति)	24	24.00	33	33.00
3.	30 अंक से अधिक किन्तु 40 अंक से कम (उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की ओर अग्रसर)	59	59.00	51	51.00
4.	40 अंक से अधिक किन्तु 50 अंक से कम (उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की ओर पूर्णरूप से अग्रसर)	10	10.00	9	9.00

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त तालिका क्रमांक – 2 से न्यादर्श हेतु चयनित उच्चतर माध्यमिक स्तर के वाणिज्य समूह में अध्ययनरत 100 छात्र एवं 100 छात्राओं का उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन सम्बंधी जानकारी का संकलन किया गया है। उपरोक्त सारणी क्रमांक – 2 के ऑकड़े दर्शाते है, कि शोध क्षेत्र में उच्चतर माध्यमिक स्तर के वाणिज्य समूह में न्यादर्श हेतु चयनित कुल 100 छात्रों में से 6 छात्रों ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की प्राप्ति नही की, जबकि 32 छात्रों ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की प्राप्ति कर ली है तथा 54 छात्रों ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की ओर अग्रसर है एवं 8 छात्रों ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन ओर पूर्णरूप से अग्रसर है।

इसी प्रकार शोध क्षेत्र में उच्चतर माध्यमिक स्तर के वाणिज्य समूह में न्यादर्श हेतु चयनित कुल 100 छात्राओं में से 9 छात्राओं ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की प्राप्ति नही की, जबकि 33 छात्राओं ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन

की प्राप्ति कर ली है तथा 52 छात्राओं ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की ओर अग्रसर है एवं 6 छात्राओं ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की ओर पूर्णरूप से अग्रसर है।

सार्थकता हेतु सारणी

समूह	संख्या	सामान्तर माध्य	मानक विचलन	अनुपात
छात्र	100	32.10	7.65	0.99
छात्राएँ	100	31.00	8.00	

$d.f = (N_1-1) + (N_2-1)$
$= (100-1) + (100-1)$
$= 99+ 99$
$= 198$

विश्लेषण एवं व्याख्या

शोध शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के वाणिज्य समूह के छात्र–छात्राओं की उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन का सांख्यिकीय विष्लेशण किया गया है। सांख्यिकी विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के वाणिज्य समूह के छात्रों के शालेय समायोजन की औसत उपलब्धि 32.10 तथा मानक विचलन 7.65 है तथा छात्राओं की औसत उपलब्धि 31.00 तथा मानक विचलन 8.00 है।

शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के वाणिज्य समूह के छात्र–छात्राओं के शालेय समायोजन का सार्थकता सारणी में किया गया है। दोनों समूहों की औसत उपलब्धियों में अंतर की गणना 't' परीक्षण के द्वारा की गई है। गणना से प्राप्त 't ' का मान 0.99 है।

198 d.f. पर सार्थकता के लिए ' t ' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.60 एवं 0.05 विश्वास स्तर पर 1.65 है, जबकि गणना से प्राप्त ' t ' का मान 0.99 है जो कि दोनों विश्वास स्तरों पर मानक मानों से कम है। अतः सांख्यिकीय विश्लेषण से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है, कि शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के वाणिज्य समूह के छात्र–छात्राओं के शालेय समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अतः परिकल्पना सत्यापित है।

11. निष्कर्ष

शोध क्षेत्र में उच्चतर माध्यमिक स्तर के वाणिज्य समूह में न्यादर्श हेतु चयनित कुल 100 छात्रों में से 6.00 प्रतिशत छात्रों ने उपलब्धि परीक्षण पर तार्किक योग्यता की प्राप्ति नही की, जबकि 32.00 प्रतिशत छात्रों ने उपलब्धि परीक्षण पर तार्किक योग्यता की प्राप्ति कर ली है तथा 54.00 प्रतिशत छात्र उपलब्धि परीक्षण पर तार्किक योग्यता की ओर अग्रसर है एवं 8.38 प्रतिशत छात्रों ने उपलब्धि परीक्षण पर तार्किक योग्यता की ओर पूर्णरूप से अग्रसर है।

शोध क्षेत्र में उच्चतर माध्यमिक स्तर के वाणिज्य समूह में न्यादर्श हेतु चयनित कुल 100 छात्राओं में से 9.00 प्रतिशत छात्राओं ने उपलब्धि परीक्षण पर तार्किक योग्यता की प्राप्ति नही की, जबकि 33.00 प्रतिशत छात्राओं ने उपलब्धि परीक्षण पर तार्किक योग्यता की प्राप्ति कर ली है तथा 52.00 प्रतिशत छात्राओं ने उपलब्धि परीक्षण पर तार्किक योग्यता की ओर अग्रसर है एवं 6.00 प्रतिशत छात्राओं ने उपलब्धि परीक्षण पर तार्किक योग्यता की ओर पूर्णरूप से अग्रसर है।

शोध क्षेत्र में उच्चतर माध्यमिक स्तर के वाणिज्य समूह में न्यादर्श हेतु चयनित कुल 100 छात्रों में से 6.00 प्रतिशत छात्रों ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की प्राप्ति नही की, जबकि 32.00 प्रतिशत छात्रों ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की प्राप्ति कर ली है तथा 54.00 प्रतिशत छात्र उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की ओर अग्रसर है एवं 8.38 प्रतिशत छात्रों ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की ओर पूर्णरूप से अग्रसर है।

शोध क्षेत्र में उच्चतर माध्यमिक स्तर के वाणिज्य समूह में न्यादर्श हेतु चयनित कुल 100 छात्राओं में से 9.00 प्रतिशत छात्राओं ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की प्राप्ति नही की, जबकि 33.00 प्रतिशत छात्राओं ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की प्राप्ति कर ली है तथा 52.00 प्रतिशत छात्राओं ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की ओर अग्रसर है एवं 6.00 प्रतिशत छात्राओं ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की ओर पूर्णरूप से अग्रसर है।

12. संदर्भ

1. गुप्ता, एस.पी. तथा गुप्ता, अल्का : आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन, (2007).
2. अग्रवाल, अनिल : भारत में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, मंथन प्रकाशन, इलाहाबाद, (2005).
3. कपिल, एच.के. : सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, (1996).
4. शर्मा, ओ.पी. : ग्रामीण क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी, प्रतियोगिता दर्पण अप्रैल (2004).
5. तिवारी, महेन्द्र मणि एवं जय सिंह : उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कला समूह के छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि व तार्किक योग्यता का अध्ययन, International Journal of Advanced Educational Research. 2017; 2(1):19-23.
6. त्रिपाठी, मनीष कुमार एवं डॉ. जय सिंह : "रीवा संभाग में हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन" International Journal of Advanced Educational Research. 2016; 1(5):48-50.
7. तिवारी, महेन्द्र मणि : सतना जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शालेय समायोजन का विज्ञान समूह के छात्र–छात्राओं की शिक्षण अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, International Journal of Humanities and Social Science Research. 2018; 4(5):59-61.